यह सब क्या मतलब रखता है?

जीवन आखिर है क्या? मैं यहाँ क्यों हूँ? क्या मेरे लिए कोई उद्देश्य या योजना है? और अगर है, तो वह क्या है? ऐसे प्रश्नों ने युगों से मानव आत्मा और कल्पना को झकझोरा है। हमारी राष्ट्रीयता, सामाजिक स्थिति, जातीयता या आस्था चाहे जो भी हो, पूरी दुनिया के लोग एक ही चीज़ों की तलाश करते हैं — परम सत्य, अर्थ, प्रेम, खुशी और मन की शांति।

आज की निरंतर बदलती, जटिल और तेज़-रफ़्तार जुड़ी हुई दुनिया में, अधिक से अधिक लोग सफलता पाने या आर्थिक रूप से टिके रहने की भागदौड़ में उलझे हुए हैं। उनके पास अक्सर जीवन के अर्थ या अपनी आत्मा के अनंत गंतव्य जैसे प्रतीत होने वाले अमूर्त विषयों पर विचार करने का समय नहीं होता।

लेकिन जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं, लोग अक्सर पाते हैं कि जीवन के दबाव और सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने की कोशिश ने उन्हें शांति या संतोष के बजाय तनाव और चिंता से भर दिया है। इसका असर उनके निजी जीवन पर भी पड़ता है — क्योंकि वे परिवार या दोस्तों के साथ समय बिताने या स्थायी संबंध बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते।

यह संसार और इसकी सभी भौतिक वस्तुएँ और क्षणिक सुख जीवन के बड़े प्रश्नों का उत्तर कभी नहीं दे सकते। भौतिक चीज़ें कुछ समय के लिए संतोष दे सकती हैं, लेकिन वे आत्मा की उस अनंत प्यास को नहीं मिटा सकतीं जो सत्य, उद्देश्य और अर्थ की खोज में है।

जब कोई व्यक्तिगत संकट या त्रासदी आती है — जैसे कोई अप्रत्याशित दुर्घटना, गंभीर बीमारी, परिवार में किसी की मृत्यु, या किसी भी प्रकार का बड़ा नुकसान — तब इस संसार की सारी उपलब्धियाँ और संपत्तियाँ आशा देने या पुनर्स्थापित करने में बहुत कम सहायक होती हैं। ऐसे ही समयों में लोग अक्सर यह समझते हैं कि जीवन के सच्चे मूल्य — प्रेम, उद्देश्य, और अनंत नियति — ही वास्तव में मायने रखते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर एक प्रेमपूर्ण पिता हैं जो प्रत्येक मनुष्य से विशेष रूप से प्रेम करते हैं और जिन्होंने इस सुंदर संसार की रचना की है। यह सृष्टि और ब्रह्मांड स्वयं इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हैं कि एक दिव्य सृष्टिकर्ता का अस्तित्व है।

जब आप किसी साफ़ रात में आकाश की ओर देखते हैं — तारों, ग्रहों और ब्रह्मांड के आश्चर्यों को निहारते हैं — तो सब कुछ पुकारता है, "ईश्वर है! देखो, उसने कितने अद्भुत कार्य किए हैं!" परमेश्वर की पूरी सृष्टि न केवल उसके अस्तित्व, शक्ति और महिमा की गवाही देती है, बल्कि हमारे प्रति उसके प्रेम, देखभाल और चिंता की भी — क्योंकि उसने हमें इतना सुंदर संसार रहने के लिए दिया है।

दिव्य सृष्टिकर्ता के रूप में, केवल परमेश्वर ही ब्रह्मांड को अर्थ दे सकते हैं, ग्रहों को उद्देश्य, हमारे हृदयों में प्रेम, हमारे मनों में शांति, शरीर को स्वास्थ्य, आत्मा को विश्राम और हमारे जीवन को आनंद दे सकते हैं। परमेश्वर कोई दूर और उदासीन सत्ता नहीं हैं; वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर हैं, जो अपनी सृष्टि से संबंध रखते हैं और प्रत्येक व्यक्ति में रुचि रखते हैं।

यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर की संतान बनते हैं। वह हमसे संवाद करते हैं, हमारे भीतर निवास करते हैं, और हमसे प्रेम करते हैं। बाइबल कहती है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

यदि आप यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित करेंगे, तो वह आपके सभी पापों को क्षमा करेंगे और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन का वरदान देंगे।

आप इस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं:

"प्रिय यीशु, धन्यवाद कि आपने मेरे लिए अपने प्राण दिए ताकि मुझे अनन्त जीवन मिल सके। कृपया मेरे द्वारा किए गए प्रत्येक गलत और प्रेमहीन कार्य को क्षमा करें। मेरे हृदय में आइए, मुझे अपना अनन्त जीवन का उपहार दीजिए, और मुझे आपका प्रेम और शांति जानने में सहायता करें।

© 2022 Activated
To learn more, visit our website at: https://activated.org/en/.